आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:02-11-14

हम भाग्यशाली बच्चों का सर्व-सम्बन्धों से साथ निभाने वाले, बापदादा ने कहा कि समय प्रमाण अभी थोड़ा सा समय है सर्व खज़ाने जमा करने का. अगर इस समय में - समय का खजाना, संकल्प का खजाना, बोल का खजाना, ज्ञान धन का खजाना, योग की शक्तियों का खजाना, दिव्य जीवन के सर्व गुणों का खजाना जमा नहीं किया तो फिर ऐसा जमा करने का समय मिलना सहज नहीं होगा. सारे दिन में अपने इन एक-एक खज़ाने का एकाउण्ट चेक करो. अगर पास विथ ऑनर बनना चाहते हो तो हर खज़ाने का जमा खाता इतना ही भरपूर चाहिए जो २१ जन्म जमा हुए खाते से प्रालब्ध भोग सको. इसलिए बापदादा कई बार इशारा दे रहा है - जमा करो-जमा करो-जमा करो.

इस बचे हुए कुछ क्षणों में, हम बच्चे अपना खाता सदा भरते रहे, इसके लिए तीन बातों की धारणा हमारे में हो - १. अपना भाग्य को सदा स्मृति में रखो. २. हर रोज अपना वायदा याद करो - साथ रहेंगे, साथ खायेंगे, साथ सोयेंगे और साथ चलेंगे. ३. जो ब्रह्मा बाप की नेचर वह हम ब्राह्मणों की नेचर हो.

१. अपना भाग्य को सदा स्मृति में रखो. कैसे?

हम ब्राह्मण मानते तो है कि स्वयं भगवान हमारी बाप बनकर पालना कर रहे है, टीचर बनकर पढ़ा रहे है और सतगुरु बनकर वरदानों से झोली भर रहे हैं. लेकिन फिर भी कभी-कभी हमारा ऊमंग-ऊत्साह कम हो जाता है और इसकी वजह से पुरुषार्थ भी ढीला हो जाता हैं. इसलिए बापदादा ने आज हमारा उमंग-उत्साह बढ़ाने के लिए कुछ ऐसे महा-वाक्यों उच्चारे जिसे पढ़कर हम वापस उमंग-उत्साह में आकर अपना पुरुषार्थ तीव्र कर सके.

बापदादा कहते है - आपके जैसा श्रेष्ठ भाग्य सारे कल्प में सिवाय आप ब्राह्मण आत्माओं के किसी का भी नहीं हो सकता. देवतायें भी ब्राह्मण जीवन को श्रेष्ठ मानते हैं. आप आत्माओं का ब्राह्मण जन्म होते ही आपको माँ-बाप की पालना मिलती है. इसके बाद पढ़ाई का भाग्य मिलता है. आगे सतगुरु का मत वा वरदान मिलता है. स्वयं परमात्मा द्वारा आप बच्चों को पालना, पढ़ाई और श्रीमत् वा वरदान प्राप्त होते है. ऐसा सारे कल्प में आप भाग्यशाली आत्माओं को ही परमात्म-पालना, परमात्म-पढ़ाई और परमात्म-सतगुरु द्वारा श्रीमत्, वरदान प्राप्त होते है.

२. हर रोज अपना वायदा याद करो - साथ रहेंगे, साथ खायेंगे, साथ सोयेंगे और साथ चलेंगे. कैसे?

हम को याद हो तो लास्ट अव्यक्त मुरली में भी बापदादा ने कहा, जैसे बच्चों को बाप के बिना एक सेकण्ड नहीं चलता है वैसे बाप को भी बच्चों के बिना नहीं चलता हैं. यह तो हम सब को अनुभव होगा कि अगर बाबा को हम अपने सच्चे दिल से बुलाते है तो वह परमात्म-बाप हमारे लिए दौड़ा-दौड़ा चला आता हैं.

आज की अव्यक्त मुरली में बापदादा ने हमें बताया कि अमृतवेले आपको परमात्म प्यार ही उठाता है. प्यार ही आपके समय की घण्टी है और यह प्यार की घण्टी ही आपको उठाती हैं. सारे दिन में परमात्मा साथ रहकर हर कार्य आपसे कराता है. फिर ऊंचे ते ऊंचे धाम से ऊंचे ते ऊंचे भगवान, आप ऊंचे ते ऊंचे बच्चों को पढ़ाने आते हैं. और सारे दिन में सतगुरु के रुप में हर कार्य के लिए श्रीमत् भी देते और साथ भी देते हैं. तो उठते हो तो भी साथ, सोते हो तो भी साथ, खाते हो तो भी साथ, चलते हो तो भी साथ.

बापदादा कहते है अगर दफ्तर में जाते हो, बिजनेस करते हो तो भी बिजनेस के आप ट्रस्टी हो लेकिन मालिक बाप है. दफ्तर में जाते हो तो आप जानते हो हमारा डायरेक्टर, बॉस बापदादा है, यह निमित मात्र है, उनके डायरेक्शन से काम करते हैं. कभी उदास हो जाते हो तो बाप फ्रैन्ड बनकर बहलाते हैं. परमात्म-बाप फ्रैन्ड भी बन जाता है. कभी प्रेम में रोते हो, आंसू आते हैं तो बाप पोंछने के लिए भी आते हैं और आपके आंसू दिल के डिब्बी में मोती समान समा देते हैं. अगर कभी-कभी नटखट होकर रुठ भी जाते हो, रुसते भी हो बहुत मीठा-मीठा. लेकिन बाप रुठे हुए को भी मनाने आते हैं. बच्चे कोई बात नहीं आगे बढ़ो. जो कुछ हुआ बीत गया, भूल जाओ, बीती सो बीती करो, ऐसे मनाते भी हैं. तो आपकी हर दिनचर्या में बापदादा आपके साथ हैं.

३. जो ब्रह्मा बाप की नेचर वह हम ब्राह्मणों की नेचर हो. कैसे?

बापदादा कहते है हम बच्चे सोचते तो है कि मेरा भाग्य बहुत ऊंचा है लेकिन सोचना-स्वरूप बनते हो, स्मृति-स्वरूप नहीं बनते हो. लेकिन जो सोचते हो, जो कहते हो उसका स्वरूप बन जाओ. स्वरूप बनने में कमी पड़ जाती है. हर बात का स्वरूप बन जाओ. जो सोचो उसका स्वरूप भी अनुभव करो. सबसे बड़े ते बड़ा हैं अनुभवी मूर्त बनना. जैसे अनादिकाल, आदिकाल में स्वरूप है अन्त में भी स्वरूप बनो.

जैसे कोई भी आक्यूपेशन वाले जब अपने सीट पर सेट होते हैं तो वह आक्यूपेशन के गुण, कर्तव्य ऑटोमेटिक इमर्ज होता है - यह तो हम-सब को अनुभव होगा. ऐसे आप सदा स्वरूप के सीट पर सेंट रहो तो हर गुण हर शक्ति हर प्रकार का नशा स्वतः ही इमर्ज होगा. मेहनत नहीं करनी पड़ेगी. इसको कहा जाता है ब्राह्मण-पन की नेचरल नेचर, जिसमें और सब अनेक जन्मो की नेचर्स समाप्त हो जाती हैं. ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर है ही गुण स्वरूप, सर्व शक्ति स्वरूप. ऐसे हमें अपनी नेचर ब्रह्मा बाप समान बनानी ही हैं.
ॐ शांति.